

शैलेश मटियानी का कृतित्व: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सुरेन्द्र कुमार¹, डॉ. कामराज सिन्धु²

¹शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

²प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, दूरवर्ती निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

शैलेश मटियानी पारिवारिक समस्याओं, आर्थिक कठिनाइयों व त्रासदियों से जूझते रहे हैं। संघर्षशील जीवनयापन करते हुए समाज के सम्मुख चट्टान की भाँति दृढ़ता से खड़े रहे। शैलेश मटियानी का सम्पूर्ण जीवन अपार कष्टों तथा दुखों से परिपूर्ण था। अल्पायु में ही पिता का धर्मान्तरण कर परिवार को त्याग देना, फिर उनकी क्षयरोग से मृत्यु, तदुपरान्त माता की भी स्तन कैंसर से मृत्यु के कारण बाल्यावस्था के सपने चूर हो गए। इन विषम परिस्थितियों में भी वे सदा ऊर्जायुक्त व कर्मठ रहे। वे गाय- बकरियाँ जंगल चराने ले जाते, सायं जंगल से काटी हुई लकड़ियों के गड्ढर सिर पर लादकर गाय-बकरियों को वापस लाते। साथ ही दूर नाले से पानी भरते तथा घर का अन्य कार्य किया करते। परिश्रम के उपरान्त मिले अन्न को ग्रहण करने में उन्हें अपार संतोष मिलता था। मटियानी जी बहुत भोले, सरल थे, माँ उन्हें सबसे अधिक स्नेह करती थी। पिता को भी वे सबसे अधिक प्रिय थे। मरणासन्न पिता ने अपने अपने अंतिम समय में पुत्र को बुलाकर उनसे माफी माँगी। दादी जी का भी उनके प्रति अपार स्नेह था। वे बहुत जुझारू, परिश्रमी तथा दृढ़ संकल्पी भी थे। लोगों के व्यंग्य बाणों से आहत होकर संकल्प लिया कि उन्हें जीवन में एक सफल लेखक और साहित्यकार बनना है और उन्होंने यह स्वप्न संकल्प पूरा कर दिखाया। वे अनाथ होते हुए भी अपने भाई-बहन की दयनीय स्थिति से दुःखी थे। चाहते हुए भी कुछ न कर पाने का उन्हें मलाल था।

शैलेश मटियानी का रचना संसार

शैलेश मटियानी जी की साहित्यिक यात्रा कविता व कहानी लेखन से प्रारम्भ हुई थी। इसकी प्रेरणा उन्हें अपने चचेरे भाई श्री जंगबहादुर, सहपाठी कुंवर सिंह तिलाश व हिन्दी के प्रसिद्ध कवि शमशेर बहादुर सिंह से मिली। इन्होंने सन् 1948-49 की अवधि में कविता लिखना प्रारम्भ किया व इनकी अधिकतर आरम्भिक कविताएँ अप्रकाशित ही रही हैं,

जो 'संघर्ष के क्षण' व 'शांति ही जीवन है' नामक शीर्षक से आचार्य ओमप्रकाश गुप्त द्वारा सम्पादित पत्रिका 'अमर कहानी' व 'रंगमहल' में प्रकाशित हुई थी। इनकी एक कहानी 'नया इंजीनियर' शीर्षक से साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' में प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त इनकी कहानियाँ कलकत्ता से प्रकाशित 'चित्रा' पत्रिका में भी छपी थीं।

शैलेश मटियानी ने अपने मुजफ्फरनगर प्रवास के दौरान भी कविताएँ लिखीं। जो 'नया संसार' पत्रिका में प्रकाशित हुई, सन् 1953 में बंबई निवास की अवधि में इनकी एक कविता 'कहीं एक मानव नया पल रहा है', 'धर्म युग' पत्रिका में छपी थी। यहीं उन्होंने कविता के साथ-साथ पचास के लगभग लघु गीत लिखे, जो 'सरिता', 'अभिनय', 'सरस्वती', 'प्रवाह', 'ज्ञानोदय' व 'धर्मयुग' आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

इनकी बंबई के जीवन पर आधारित कहानी 'चिथड़े' प्रकाशित हुई, जिसमें पारिश्रमिक के रूप में इन्हें चालीस रूपए मिले। ये अपनी गीतों को लेकर आकाशवाणी के बंबई केन्द्र में गए, जहाँ प्रोड्यूसर भवानीप्रसाद मिश्र ने इनका गीतकार के रूप में अनुबंध कराया। इसके पश्चात् शैलेश अपनी दो कहानियाँ 'एक कप चा दो खारा बिस्कुट' व 'विट्टल' आकाशवाणी द्वारा प्रकाशित करवाने के उद्देश्य से मिश्र जी को देकर आए, उन्होंने दोनों रचनाएँ इनको वापस देते हुए कहा कि ये आकाशवाणी को ध्यान में रखकर नहीं लिखी गयी है। उन्होंने बड़ी आत्मीयता से इनसे कहा कि कथा-साहित्य पर तुम्हारी लेखनी के लिए अधिक सम्भावनाएँ होने के कारण तुम अपना पूरा ध्यान व समय इस पर लगाओ। इन्होंने कवि-गीतकार बनने के बजाय कथाकार बनने का प्रयास किया।

शैलेश मटियानी ने उपन्यास, कहानी, लोककथा संग्रह, बाल-साहित्य, लेख संग्रह व संस्मरण आदि का सृजन

किया। इन्होंने दो पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। इनके साहित्य का महत्त्वपूर्ण बिन्दु कथा-साहित्य (उपन्यास व कहानी) ही रहा है। इस रचनात्मक लेखन के अतिरिक्त कालान्तर में सृजित प्रचुर लेख संग्रह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है, जिनमें समसामयिक राजनीतिक व समास से सम्बद्ध ज्वलन्त प्रश्नों पर वैचारिक मंथन किया गया है।

कहानी

शैलेश मटियानी का कथा-साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी से उपन्यासों के साथ-साथ हिन्दी साहित्य जगत को कालाजयी कहानियों के द्वारा समृद्ध किया है। मटियानी जी की आँचलिक पृष्ठभूमि तथा महानगरीय जीवन पर आधारित कहानियों की सर्जना की है। प्रमुख कहानी-संग्रह इस प्रकार है- 1- मेरी तैतीस कहानियाँ 1961, 2- दो दुःखों का एक सुख 1966, 3- दूसरों के लिए 1967, 4- सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ 1967, 5- सफर पर जाने से पहले 1969, 6- हारा हुआ 1970, 7- मेरी प्रिय कहानियाँ 1972, 8- तीसरा सुख 1972, 9- अतीत तथा अन्य कहानियाँ 1972, 10- हत्यारे 1973, 11- पाप मुक्ति तथा अन्य कहानियाँ 1973, 12- बर्फ की चट्टानें (छोटी) 1974, 13- जंगल में मंगल 1975, 14- महाभोज 1975 15- चील 1976, 16- कोहरा 1980, 17- प्यास और पत्थर 1982, 18- छिड़ा पहलवान वाली गली 1983, 19- अहिंसा तथा अन्य कहानियाँ 1987, 20- बर्फ की चट्टानें (बड़ी) 1990, 21- माता तथा अन्य कहानियाँ 1993, 22- नाच जमूरे नाच 1995, 23- दस प्रतिनिधि कहानियाँ 1997, 24- शैलेश मटियानी की 51 कहानियाँ 2004, 25- भेड़े और गडरिये 2004, 26- उत्सव के बाद 2004, 27- सूखा सागर 2004, 28- शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ 2004।

उपन्यास:

शैलेश मटियानी ने विशेष रूप से आँचलिक उपन्यासों की सर्जना की है। उन्होंने कई आँचलिक उपन्यासों द्वारा हिन्दी साहित्य भंडार को समृद्ध किया है। उनकी कर्म भूमि कुमाऊँ तथा बंबई रहे हैं, अतः इन दो अंचलों से सम्बद्ध कई आँचलिक उपन्यासों का उन्होंने सृजन किया है। उनके अधिकांश उपन्यासों में प्रायः इन दो अंचलों का ही चित्रण मिलता है। कुमाऊँ तथा बंबई प्रकृति के सौन्दर्य से सम्बद्ध मनोरम पार्वत्य प्रदेश उनकी जन्मस्थली ही नहीं, वरन्

अनाथत तथा असहायता में उनके बालपन की सहचरी, आश्रयस्थली भी रही है, और बंबई उनकी आजीविका तथा साहित्य सर्जना का सोपान रहा है।

1. बंबई अंचल से सम्बंधित उपन्यास: बंबई अंचल की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास हैं - 'बोरीबली से बोरीबंदर तक', 'कबूतरखाना', 'किस्सा नर्मदा बेन गंगूबाई', 'पुनर्जन्म के बाद' आदि।
2. कुमाऊँ से सम्बन्धित रचनाएँ: कुमाऊँ अंचल की पृष्ठभूमि पर आधारित प्रमुख उपन्यास है - 'हौलदार', 'चिड़ी रसैन', 'चैथी मुट्टी', 'एक मूठ सरसों', 'मुख सरोवर के हंस', 'उगते सूरज की किरन', 'भागे हुए लोग', 'गोपुली गफूरन', 'उत्तरकांड' आदि।

इसके अतिरिक्त कई उपन्यास अन्य क्षेत्रों की पृष्ठभूमि पर लिखे गए हैं, - 'मंजिल दर मंजिल', 'दो बूंद जल', 'कोई अजनबी नहीं', 'छोटे-छोटे पक्षी' आदि। शैलेश मटियानी के द्वारा लिखित उपन्यासों का यहाँपर विवेचन किया जा रहा है जो इस प्रकार हैं - 1. बोरीबली से बोरीबंदर तक 1959, 2. कबूतरखाना 1960, 3. हौलदार 1961, 4. चिड़ी रसैन 1961, 5. किस्सा नर्मदा बेन गंगू बाई 1961, 6. मुख सरोवर के हंस 1962, 7. चैथी मुट्टी 1962, 8. एक मूठ सरसों 1963, 9. उगते सूरज की किरन 1963, 10. दो बूंद जल 1966, 11. मंजिल दर मंजिल 1966, 12. कोई अजनबी नहीं 1966, 13. भागे हुए लोग 1966, 14. पुनर्जन्म के बाद 1970, 15. बर्फ गिर चुकने के बाद 1975, 16. छोटे-छोटे पक्षी 1977, 17. आकाश कितना अनन्त है 1979, 18. बावन नदियों का संगम 1981, 19. अर्द्धकुंभ की जात्रा 1983, 20. नागवल्लरी 1985, 21. माया-सरोवर 1985, 22. रामकली 1990, 23. गोपुली-गफूरन 1991, 24. सक्तिरी 1992, 25. चंद औरतों का शहर 1992, 26. मुठभेड़ 1993, 27. उत्तरकाण्ड 1996।

अन्य विधाएँ

मटियानी जी ने कथा साहित्य के अतिरिक्त अन्य विधाओं पर भी अपनी लेखनी चलायी है। इनमें उनके आत्मकथापरक, संस्मरणात्मक, निबंध संकलित हैं। 'लेखक की हैंसियत से', 'पर्वत से सागर तक', 'मुड़-मुड़ कर मत देख' कृतियाँ मटियानी जी के संघर्षमय कटु अनुभवों व उपेक्षित जीवन की मार्मिकता के प्रामाणिक दस्तावेज हैं।

1. लेखक की हैसियत से:

सन् 1975 ई. में प्रकाशित 'लेखक की हैसियत से' शीर्षक पुस्तक एक संस्मरणात्मक एवं आलोचनात्मक आत्मकथात्मक निबंध-संग्रह है। इसमें लेखक ने जिन दारुण, विषम एवं प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच रहकर अपनी रचनात्मक महत्वाकांक्षाओं को पूरा किया, उसका यथार्थपरक प्रामाणिक चित्रण किया है।

2. पर्वत से सागर तक:

यह आत्मकथ्यपरक संस्मरण मटियानी जी का दूसरा लेखों का संग्रह है। इसका पुस्तक सन् 2000 ई. में प्रकाशित हुआ। पर्वत से तात्पर्य कुमाऊँ है तथा सागर अर्थात् बंबई एक लेखक का जीवन-सफर इसमें उल्लिखित है। इसमें लेखक ने अपने जीवन-काल की पर्वतीय उपत्यकाओं से आरम्भ की गयी यात्रा जो सागर तट पर बसे बंबई शहर तक पहुँचती है। उस विषम जीवन यात्रा का बड़ा मार्मिक चित्रण हुआ है।

3. रास्ता बंद है और लक्ष्य अधूरा:

यह संस्मरण सन् 1999 ई. में प्रकाशित इस संस्मरण में मटियानी जी ने अपने साहित्य सर्जना काल के आरम्भ से लेकर अद्यतन की कुछ मर्मस्पर्शी दुःखपूर्ण घटनाओं का उल्लेख करते हुए एक हिन्दी लेखक के संघर्ष को प्रामाणिक रूप में उजागर करने का प्रयास किया है।

4. मुड़-मुड़ कर मत देख:

सन् 2001 ई. में प्रकाशित इस रचना में मटियानी जी द्वारा लिखे हुए विभिन्न आत्म संस्मरणात्मक लेख संकलित है।

5. जनता और साहित्य:

1976 ई. में प्रकाशित 'जनता और साहित्य' निम्बन्ध संग्रह में मटियानी जी ने समाज से सम्बद्ध विविध पक्षों के बारे में अपने विचार प्रकट हुए हैं। इसमें सम्मिलित निम्बन्ध इस प्रकार हैं - 'रचना और पाठक', 'व्यवस्था और लेखक', 'विफलता और रचना', 'निष्कर्षों की खोज', 'व्यवस्था के भीतर', 'जनता और साहित्य'।

6. लेखक और संवेदना:

1983 ई. में प्रकाशित इस निबन्ध संग्रह में मुख्य रूप से लेखक के साथ उसकी संवेदना की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है।

7. मुख्य धारा का सवाल:

1988 ई. में प्रकाशित मटियानी जी का यह तीसरा निबंध संग्रह है। इसमें राजनीतिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए लेख संकलित हैं।

8. यदा-कदा:

सन् 1985 ई. में प्रकाशित इस संकलन में मटियानी जी की कुछ अत्यन्त विचारोत्तेजक टिप्पणियाँ, आलोचनाएँ तथा पत्रों का संकलन किया गया है।

9. राष्ट्रभाषा का सवाल:

सन् 1980 में प्रकाशित इस निबंध-संग्रह में राष्ट्र और राष्ट्रीय भाषा के प्रश्न को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि वास्तव में राष्ट्रभाषा क्या होनी चाहिए। इस सम्बन्ध में भारतीय संविधान पर भी उन्होंने कई प्रश्न चिह्न लगाए हैं। लेखक ने हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा माना है तथा प्रादेशिक भाषाओं के प्रति भी आत्मीयता एवं सम्बद्धता दर्शायी है।

10. त्रिज्या:

सन् 1988 ई. में प्रकाशित इस पुस्तक के अन्तर्गत कुछ संस्मरण, कहानियाँ व लेख संकलित हैं, जो निम्नांकित हैं- संस्मरण: 'अपसत्य यज्ञोपवीत', 'लेखक की हैसियत से'।

कहानियाँ: 'चील', 'मैमूद', 'प्यास', 'प्रेतमुक्ति', 'इब्बू मलंग', 'भय', 'मिट्टी', 'भविष्य', 'रहमतुल्ला' आदि।

लेख: 'पुरस्कारों की प्रासंगिकता', 'रचना-पाठ और आलोचना'।

उपर्युक्त लेख लेखनीय जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं से सम्बद्ध हैं।

11. किसके राम कैसे राम:

सन् 1991 ई. में प्रकाशित इस निबन्ध संग्रह में हिन्दू तथा मुस्लिम सम्प्रदाय में व्याप्त वैमनस्य एवं साम्प्रदायिकता पर गम्भीर चिन्तन किया है कि किस प्रकार कुछ राजनैतिक दल अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रहे हैं? लेखक के अनुसार राम के नाम का राजनैतिक हितों के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है, जबकि परिपाटी यह रही है कि राम और रहीम को एक मानकर साहित्य सृजन हुआ है और समाज में सांस्कृतिक चेतना का प्रसार हुआ है। इसमें संकलित

निबन्ध इस प्रकार हैं - 'किसके राम कैसे राम', 'रामायण पर चली कलम कटारी', 'राम का नाम', 'हिन्दू मुसलमान का सवाल', 'भारतीयता की समझ का इमामबाड़ा', 'साम्प्रदायिकता विरोध की साम्प्रदायिकता', 'राम जन्मभूमि बनाम बाबरी मस्जिद', 'रामायण तथा रामचरित मानस के सांस्कृतिक खतरे' व 'चिढ़ी पत्री' आदि।

12. कागज की नाव:

यह निबन्ध संग्रह भी सन् 1991 ई. में ही प्रकाशित हुआ, इसमें संकलित निबन्ध हैं - 'कागज की नाव' 'किसको किससे खतरा है', 'हिन्दू और मुसलमान मजहब बड़ा कि मुल्क', 'सवाल का हल', 'झूठों की नैया', 'लोकतंत्र के दरबार', 'हमारे माननीय विधायक', 'कैसा संवाद किससे संवाद', 'स्त्री हत्या का उत्सव', 'कौन है भारत का भाग्य विधाता', 'तमस दूर करने की सनक', 'राष्ट्रपति बनाम प्रधानमंत्री', 'क्या हम जानते हैं', 'आदमी और कानून', 'कानून का राज्य संविधान', 'हमारे जीवन की किताब' तथा 'कठफोड़वा कहाँ रहता है'?

13. किसे पता है राष्ट्रीय शर्म का मतलब:

यह पुस्तक 1995 ई. में प्रकाशित हुई, इस संग्रह के अधिकतर लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ प्रकाशित भी हुए थे। इस संग्रह के प्रमुख निबंध हैं- 'कानून से ऊपर कौन?', 'राष्ट्रीयता की चुनौतियाँ', 'क्या फैसला करेगा सर्वोच्च न्यायालय?', 'रामजन्म भूमि बनाम बाबरी मस्जिद', 'राजनीति नहीं', 'सांस्कृतिक रूप में प्रतिष्ठित हो राम', 'विवाद, विध्वंस और विनाश दोषी कौन?', 'किसे पता है राष्ट्रीय शर्म का मतलब?', 'बी-शहबानो का सवाल', 'धर्म निरपेक्षता बनाम हिन्दू-निरपेक्षता', 'दो समान्तर स्मृतियों का द्वन्द्व' 'जो टोपी आप रखना चाहते हैं', 'बाबरी मस्जिद का पुनर्निर्माण', 'बी-शाहबानो और भारतीय संविधान', 'भारत की अन्तर्राष्ट्रीय छवि का सवाल', तथा 'आखिर धर्मनिरपेक्षता का तात्पर्य क्या है?' इन लेखों में लेखकीय संवेदना भी और सबके सामाजिक सरोकार की वकालत भी।

14. राष्ट्रीयता की चुनौतियाँ:

सन् 1997 ई. में प्रकाशित इस संग्रह में संकलित निबन्ध हैं - 'राष्ट्रीयता की चुनौतियाँ', 'राष्ट्रबोध और लेखक', 'लेखक की सामाजिक साख का सवाल', 'संविधान के साथे

में उपजती राष्ट्र विरोधी राजनीति', 'आजादी का अर्थ', 'जय हे जय हे किसकी जय हे', 'धर्म संस्कृति और राजनीति', 'कश्मीर की मूल समस्या क्या है?', 'बहु संस्कृति (वाद) की पेशकश का नमूना', 'धर्म की राजनीति बनाम राजनीतिक धर्म', 'संस्कृति संविधि और नागरिकता', 'संविधान के आइने में', 'विवेकाधिकार बनाम कानून', 'क्षमादान का कानूनी नाटक: 1', 'क्षमादान का कानूनी नाटक: 2', 'चहल कदमी नहीं, चहल कदमी', 'लाल सूरज का डूबना', 'हिन्दुत्व की आधारशिला क्या है?', 'केन्द्र के पाखण्ड में सुलगता पहाड़', 'गाँधी:रामराज्य और अहिंसा', 'हिंसा लक्ष्य पूर्ति का साधन नहीं' तथा 'अहिंसा और कानून'।

लोक साहित्य

1. अवतार गाथा:

कुमाऊँ में धर्म की जड़ें अत्यन्त गहरी हैं। यहाँ के निवासी सरल, प्रकृति-प्रेमी व धर्म-भीरु हैं। यहाँ के निवासियों की पूजा-अर्चना की पद्धति में विशिष्टता है। यहाँ हिन्दू देवी-देवताओं की उपासना के साथ क्षेत्रीय देवी-देवताओं की उपासना भी होती है। कुमाऊँ के प्रत्येक ग्राम-नगर में क्षेत्रीय देवी-देवताओं की प्रतिष्ठा की गयी है। कुमाऊँ में प्रमुख क्षेत्रीय देवता हैं - ग्वल, हरु, सैम, ऐड़ी, गंगनाथ आदि तथा प्रमुख क्षेत्रीय देवियाँ हैं - नंदा देवी, जाखनदेवी, कसारदेवी, पाषाणदेवी, जलदेवी, शीतलादेवी, त्रिपुरादेवी आदि।

2. बेला हुई अबेर:

यह रचना सन् 1962 ई. में प्रकाशित हुई थी, यह अवतार गाथा कुमाऊँ की लोक संस्कृति का तो दिग्दर्शन कराती ही है, साथ ही जगमानस की धार्मिक आस्था का भी चित्रण करती है।

लोक कथाएँ

मटियानी जी द्वारा सन् 1953 से 1957 ई. के बीच कुमाऊँ अंचल में प्रचलित लोक कथाओं का संकलन किया गया। विशिष्ट शैली में बोधगम्य बना कर तथा आँचलिकता का पुट देकर नौ संग्रहों में इन्हें प्रस्तुत किया। इसमें कुमाऊँ की लोक कथाएँ तीन भागों में लिखी गयी हैं। इन लोक कथाओं को मटियानी जी ने अपनी दादी के मुख से तथा पाण्डेतोली निवासी कुमाऊँ के रससिद्ध लोक गायक जोगाराम के मुख से सुनी थी।

1. अल्मोड़ा की लोक कथाएँ:

यह लोक-कथा संग्रह सन् 1957 में लिखा गया तथा सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें अल्मोड़ा क्षेत्र की लोक कथाओं को आँचलिकता का पुट देते हुए रोचक व सरल शैली में प्रस्तुत किया गया है।

2. बारा मंडल की लोक कथाएँ:

यह संग्रह सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुई। इस संग्रह में संग्रहित छः लोक कथाएँ इस प्रकार हैं - 'मेरी बेटा राधिका', 'नारसी धना', 'ईश्वर की मिठाई', 'कुश', 'सती चंद्रवती', और गांगी 'रमौली'। इन लोक कथाओं में अल्मोड़ा में एन परगना बारामंडल की प्राचीन लोक संस्कृति उसके ऐतिहासिक तथ्यों व लोक मानस का सुन्दर चित्रण किया गया है।

3. चंपावत की लोक कथाएँ:

सन् 1960 ई. में प्रकाशित इस संग्रह में लेखक ने अल्मोड़ा जिले की एक तहसील चंपावत के आस-पास की लोक कथाओं को संकलित कर नये शिल्प के साथ प्रस्तुत किया है इस कथा संग्रह में सात कहानियाँ संग्रहित हैं - 'में ठेकिया ठीक', 'कमुली काकी नरुवा नाती', 'यह क्या करते हो हजूर', 'किसी से न कहना', 'हिमाली', 'गुरु गोरखनाथकी दक्षिणा' तथा ललुवा लाटा'।

4. डोटी प्रदेश की लोक कथाएँ:

यह संग्रह 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। यह कुमाऊँ तथा नेपाल की सीमाओं से जुड़े डोटी प्रदेश के सरल लोगों व उनकी संस्कृति को दर्शाती, सात लोक कथाओं का संग्रह है। ये लोक कथाएँ हैं - 'धमाधम मारु चमाचम मारु', 'आपणा आपणा कुकन्या छुन', 'तिमलाई भन्छू तिमिलाई यार', 'अंग्रेज: ब्रह्म के बेटे', 'यस्तो खान्या यस्तो हगन्या', गटर पटर करन्या हो' तथा तस्तोई आमा'।

5. नैनीताल की लोक कथाएँ:

आलोच्य संग्रह सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें नैनीताल क्षेत्र की लोक कथाएँ संकलित है। आँचलिकता से ओत-प्रोत ये लोक कथाएँ नैनीताल की संस्कृति व समाज का दिग्दर्शन कराती है। ये चार लोक कथाएँ हैं - 'कलुवा कुभागा', 'जरा किनारे-किनारे', 'तू ही था' तथा 'अजीत बकाल'।

6. तराई प्रदेश की लोक कथाएँ:

यह कथा संग्रह लेखक ने सन् 1957-58 ई. में लिखा। इसका प्रकाशन सन् 1960 ई. में हुआ इस संग्रह में संकलित लोक कथाएँ इस प्रकार हैं - 'सूर्य कंवल', 'बिन्दू-सिंदू रमौल' और 'कालू वजीर' तथा 'योग संयोग'। नैनीताल जनपद का मैदानी भू-भाग तथा ऊधमसिंह नगर जनपद तराई प्रदेश कहा जाता है। इन कथाओं में तराई भावर में प्रचलित वीर गाथाओं की सुन्दर एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इन लोक कथाओं को लिखने की प्रेरणा मटियानी जी को लोकगायक जोगाराम से मिली।

बाल-साहित्य

मटियानी जी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध, लोककथाओं के अतिरिक्त बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया है। मटियानी जी का बाल साहित्य रोचक, प्रेरणास्पद तथा हास्य व्यंग्यपूर्ण है। इसे सरल व सुबोध भाषा में लिखा गया है।

1. सिन्धु और गंगा:

यह पुस्तक सन् 1972 ई. में प्रकाशित हुई। इसमें पांच बालोपयोगी कहानियाँ हैं - 'सिन्धु और गंगा', 'बड़े साहब की नौकरी', 'राजा मानी और गौरैया रानी', 'काबेरी और कलुआ' तथा 'रमेश और मधु'।

2. अपनी-अपनी परम्परा:

मटियानी जी द्वारा लिखित बालोपयोगी दूसरा कहानी संग्रह 1974 ई. में प्रकाशित हुआ। इसमें संकलित सात कहानियाँ इस प्रकार हैं - 'नए डाकू', 'रूनझुना दीदी रूनझुना', 'पिता की विरासत', 'राजा जगत चंद', 'सोई हुई ममता', 'सदानन्द निरानंद' तथा 'अपनी अपनी परम्परा'।

3. चुहिया का दूल्हा:

यह सन् 1975 में प्रकाशित बालोपयोगी कथा-संग्रह है। इसमें तीन बाल कहानियाँ हैं - 'चुहिया का दूल्हा', 'भग गया भूत' और 'बुद्धनाथ' ये तीनों बाल कहानियाँ शिक्षाप्रद व हास्य व्यंग्य से परिपूर्ण हैं।

4. चांदी का रुपया और रानी गौरैया:

यह पुस्तक सन् 1975 में प्रकाशित हुई, इस कहानी में मटियानी जी ने सरल काव्यात्मक रूप में रानी गौरैया की कहानी बच्चों से कही है। यह कविता कथा बालगीत का बोध कराती है तथा नैतिक शिक्षा का पुट है।

5. खाँसी को फाँसी:

यह लेखक के ध्वनि रूपकों का एक संग्रह है इसमें आठ एकांकी रूपकों का संकलन है। इस एकांकी है - 'खाँसी को फाँसी', 'मास्टर का चुनाव', 'मौत का सामान', 'गाँव का पोस्टमैन', 'अजब कथा बनवारी', 'दूर के ढोल', 'गुरु जी की काशी यात्रा-योजना' तथा 'फर्क बस इतना है'। यह सभी एकांकी रोचक, नैतिक शिक्षा देने वाले तथा हास्य से परिपूर्ण हैं। मटियानी जी द्वारा लिखी गयी अन्य बालोपयोगी शिक्षाप्रद कहानियाँ इस प्रकार हैं - 'तीन रेम की कथा', 'योग-संयोग', 'फूलों की नगरी', 'भरत-मिलाप', 'सुबह के सूरज', 'मां तुम आओ', 'माँ की वापसी', 'बिल्ली के बच्चे', 'कालीपार की लोक कथाएँ', 'यजमान और पुरोहित', 'हाथी और चींटी की लड़ाई' आदि।

निष्कर्ष:

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि शैलेश मटियानी समाज के किसी एक पक्ष पर ही दृष्टि नहीं रखते, बल्कि समाज के सभी पक्षों पर दृष्टि रखते हैं। उनको अपनी जड़ों से रागात्मक लगाव था। उनकी अधिकांश कहानियाँ एवं उपन्यासों में इन जड़ों से सिंचित व पोषित कथानक है। कथा-साहित्य में मानवीय सम्बन्धों की आस्था जगाती स्पंदनमयी गर्माहट है। वह कथा-रस के पूर्ण निर्वाह के साथ अपनी कालजयी उपन्यासों और कहानियों में मानव-मन के अन्दर गहरे उतरे हैं। हृदयगत संवेदना के स्वर को रागात्मक बनाने के लिए मस्तिष्क की मामूली-सी थापों की रंगत भर ली है। उनके जीवानुभव तथा उनकी संवेदनाएँ, उनके रचनाधर्मों मानस का अभिन्न अंग बनकर आयी। उनके साहित्य में पहाड़ की वीरानी, विशिष्ट किस्म के संकट, समस्याएँ, सहजता, प्रेम, उदासीनता, खास तरह की कर्मण्य दार्शनिकता, प्राकृतिक वैभव, जीवन-शैली आदि एक स्तर पर स्थानीय ढंग से उभरते हैं। शैलेश मटियानी ने रचनाओं में-मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने और समाज के नीचे से नीचे और विपन्न लोगों के अन्दर मानवीयता की खोज और उन्हें सम्मान देने की कोशिश ही है। उनके गढ़े पात्रों में प्रकारांतर से उनकी जीवन-संघर्ष प्रतिबिम्बित हुआ है। उनका कथा-परिवेश पर्वतीय अँचल से महानगर तक फैला हुआ है, सर्जनात्मकता का दायरा सदैव खुला रखा है।

उनकी गहरी और पैनी नज़र से कोई बच नहीं पाता। वे सामाजिक यथार्थ को जैसे छील कर रख देते हैं।

सन्दर्भ:

1. शैलेश मटियानी - डोटी प्रदेश की लोककथाएँ (आमुख) पृ.4
2. शैलेश मटियानी - लेखक की हैसियत से - पृ.33
3. शैलेश मटियानी - एक मंगल द्वीप - पृ.84
4. शैलेश मटियानी - मेरी तैंतीस कहानियाँ- पृ.18
5. शैलेश मटियानी - दूसरों के लिए- पृ.134
6. शैलेश मटियानी - मटियानी की कहानियाँ (जख्मों की पहचान) पृ.32
7. शेखर पाठक - शैलेश मटियानी के मायने - पहाड़ 2001 अंक 13, पृ.12
8. शैलेश मटियानी - लेखक की हैसियत से - पृ.26-27
9. शैलेश मटियानी - मुड़-मुड़ कर मत देख - पृ.24
10. शैलेश मटियानी - मेरी तैंतीस कहानियाँ (भूमिका भाग) पृ.17, 18
11. शैलेश मटियानी - मुड़-मुड़ कर मत देख - पृ.155
12. शेखर पाठक - शैलेश मटियानी के मायने - पहाड़ 2001 अंक 13, पृ.12
13. दामोदर दत्त दीक्षित - ऊँचे पाये के रचनाकार - पहाड़ 2001 अंक 13, पृ.209
14. शैलेश मटियानी - लेखक की हैसियत से - पृ.78
15. दामोदर दत्त दीक्षित - ऊँचे पाये के रचनाकार - पहाड़ 2001 अंक 13, पृ.49
16. शैलेश मटियानी - मेरी तैंतीस कहानियाँ, पृ. 24
17. शैलेश मटियानी - तीसरा सुख पृ.6
18. शैलेश मटियानी - बोरीबली से बोरीबंदर तक - पृ.11, 12
19. शैलेश मटियानी - कबूतरखाना पृ.65

20. शैलेश मटियानी - किस्सा नर्मदा बेन गंगू बाई पृ.30
21. शैलेश मटियानी - हौलदार पृ.1
22. शैलेश मटियानी - चिड्डी रसैन (भूमिका से उद्धत)
23. शैलेश मटियानी - चैथी मुड्डी - पृ.99
24. शैलेश मटियानी - एक मूठ सरसों पृ.54
25. शैलेश मटियानी - छोटे-छोटे पक्षी पृ.137, 138
26. शैलेश मटियानी - आकाश कितना अनंत है - पृ.64
27. शैलेश मटियानी - गोपुली गफूरन पृ.87
28. शैलेश मटियानी - उगते सूरज की किरन (एक कुमाऊँनी लोकगीत का हिन्दी रूपान्तरण - पुस्तक के भूमिका भाग से उद्धत)
29. शैलेश मटियानी - चंद औरतों का शहर - पृ.24
30. शैलेश मटियानी - भागे हुए लोग - पृ.132
31. शैलेश मटियानी - माया सरोवर - पृ.70, 71
32. शैलेश मटियानी - रामकली पृ.14
33. शैलेश मटियानी - सक्तिरी पृ.117
34. शैलेश मटियानी - दो बूँद जल पृ.110
35. शैलेश मटियानी - मंजिल दर मंजिल पृ.39
36. शैलेश मटियानी - कोई अजनबी नहीं पृ.122